साथी और उनकी जीवन साथी !

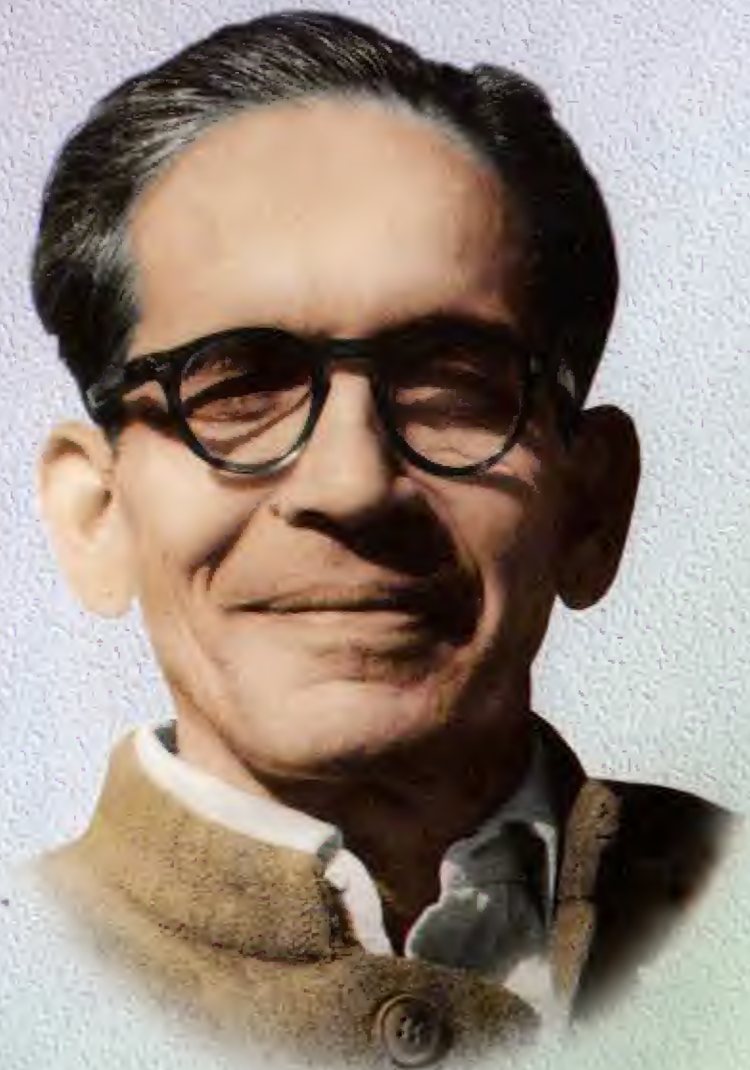




एस्. एम. और ताराबाई

एस. एम. जोशी

(जीवनी की झलक)



प्रस्तावना
भाई वैद्य

लेखक
प्रो. चन्द्रकान्त पाटगांवकर

स्वतंत्रता और समता के संग्राम के सेनानी !

श्री. एस. एम. जोशी



प्रथम राष्ट्र सेवा दल प्रमुख

'छोडो भारत' आंदोलन में



भूमिगत **'इमाम अली !'**

एस. एम. जोशी

(जीवनी की झलक)

प्रस्तावना

भाई वैद्य

लेखक

प्रो. चन्द्रकान्त पाटगांवकर

प्रो. चन्द्रकान्त शंकर पाटगांवकर
''सेवा'', पद्मभूषण वि. स. खांडेकर पथ,
५, राजारामपुरी, कोल्हापुर - ४१६ ००८
दूरभाष : (०२३१) २५२६७०८

प्रकाशक
सौ. कुसुम चन्द्रकान्त पाटगांवकर
''सेवा'', पद्मभूषण वि. स. खांडेकर पथ,
५, राजारामपुरी, कोल्हापुर - ४१६ ००८

मुद्रक
भारती मुद्रणालय
८३२ 'ई', शाहूपुरी ४ थी गल्ली,
कोल्हापुर ४१६ ००१
फोन : (०२३१) २६५४३२९

मूल्य
पाँच रुपये केवल

श्रद्धेय एस. एम. अण्णाजी के
कष्टमय जीवन में आजीवन साथ देनेवाली
आदरणीय ताराबाईजी को
सादर समर्पण !

प्रस्तावना

श्रद्धेय एस. एम. जोशी यह एक असाधारण समाजवादी नेतृत्व था । उनके कार्यक्रम में वे स्वयं मानो महाराष्ट्र के चारित्र्य को मापदंड थे । कोई मानते थे कि उनके नाम का अर्थ संयुक्त महाराष्ट्र था। कोई मानते थे उसका अर्थ समता और ममता था । लेकिन सभी मानते थे कि वे समाजवादी महामानव थे । उनका पूरा जीवन समाज के हित के लिए समर्पित था । उन्होंने समाजवादी आंदोलन की संस्थापना करने में जयप्रकाशजी को समर्थन दिया । वे राष्ट्र सेवा दल जैसे महान समाजवादी संघटना के संस्थापक थे । उनकी वजह से ही संरक्षण कामगारों का अखिल भारतीय फेडरेशन बन सका । उनके बिना संयुक्त महाराष्ट्र असंभव था । उनकी प्रेरणा से ही मराठवाडा विद्यापीठ नामांतर करके डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ हो गया । उन्होंने जिन हजारों युवकोंको समाजवादी दिक्षा दी वे आज भी कार्यरत हैं । महाराष्ट्र राज्यको पुरोगामी दिशामें रखनेका काम उन्होंने बहुत कारगरतासे पूरा किया । ऐसे महानुभाव का चरित्र मेरे मित्र प्रो. चंद्रकांत पाटगावकर ने प्रसिद्ध किया इसका मुझे हर्ष है ।

प्रो. चंद्रकांत पाटगावकर एक मायनेमें अद्वितीय व्यक्तित्व है । महात्मा फुले, शाहू महाराज, डॉ. आंबेडकर, साने गुरुजी और जयप्रकाशजी की जीवनी पर हजारो व्याख्यान उन्होंने दिये और करीब 4 लाख छात्रोंतक समता का संदेश पहुँचाया । मुझे नहीं लगता कि यह असाधारण काम और किसीने इसी तरह किया होगा । इसलिए मैं इस व्यक्तित्वको अद्वितीय मानता हूँ । श्रद्धेय एस. एम. जोशीजीके जन्मशती काल में सौ व्याख्यान देने का निश्चय उन्होंने किया है और वे पूरा करेंगे इसके बारे में नि:संदेह हूँ । स्वतंत्रता सेनानी के नाते उन्हें जो निर्वाह वेतन मिलता है उस में वे यातायात खर्च निभा लेते हैं । किसी भी शिक्षा संस्थाके एक छदाम की अपेक्षा वे नहीं रखते । प्रो. चंद्रकांत पाटगावकर राष्ट्र सेवा दल के निस्सिम पाईक है । इस उमर में भी उनका राष्ट्र सेवा दल का कार्य जारी है ।

'चले जाव' आंदोलन में इमाम अली बने श्रद्धेय एम. एम. जोशी दो जेबो में पिस्तुल रखकर देशभ्रमण करते थे । लेकिन 1948 के बाद समाजवादी आंदोलन में साध्य साधन विवेक का निर्णय लिया । संयुक्त महाराष्ट्र के सवालपर जब काँग्रेसीयोंने नेहरूजी के दबाव के कारण परिषद समाप्त की तब श्रद्धेय एस. एम. जोशीजीने आदरणीय [illegible] की सदारत में संयुक्त महाराष्ट्र समिती गठित की । [illegible] मार्गपर चले हुए थे । लेकिन श्रद्धेय जोशीजी ने [illegible] दिया । श्रद्धेय जोशी जी का नेतृत्व इतना [illegible] था कि [illegible]

का मार्ग अपनाने की हिंमत नहीं हुई । श्रद्धेय जोशी जी की वजहसेही मराठी गुजराथी द्वेष भावना उस आंदोलनसे नष्ट हो गयी । इतनाही नहीं श्रीमती अनुताई लिमये जी के नेतृत्व में उन्होने महाराष्ट्र गुजराथ के सत्याग्रहियोंकी एक टुकडी भेजी थी । मेरी दृष्टि से श्रद्धेय जोशीजी का सबसे बडा वैशिष्ट्य यह था कि जितनी परिस्थिती प्रतिकूल उतनाही उस परिस्थिती का मुकाबला करने का निर्धार दुर्दम्य बना देते थे । प्रतिकूल परिस्थिती के सामने उन्होंने कभी भी शरण नहीं दी । पूरे जीवन में जमातवाद के विरोध में वे निरंतर झगडते रहे । लेकिन श्रद्धेय जोशी जी आज होते तो वैश्विकीकरण के विरोध में बुढापे मे लडने का जोश देखकर समाज प्रेरणा ले लेता ।

आशा है कि प्रो. पाटगावकरजी की यह किताब हजारों युवकों के हाथ में जाये और उससे वे प्रेरणा लें ।

प्रो - पाटगांवकरजी को इस वर्ष का 'बॅ. नाथ पै समाजसेवक पुरस्कार' प्रो. मधु दंडवतेजी के शुभ करकमलो के द्वारा प्रदान किया गया । इस पुरस्कार के जो दस हजार रुपये उन्हें मिले उनका विनियोग एस. एम जोशीजी की जीवनी प्रकाशित करने में उन्होंने किया !

छात्र तथा युवकोंके लिए केवल पाँच रुपये मूल्य रखकर हो हजार पुस्तिकाओं की विक्रीसे मिलनेवाले कुल दस हजार रुपये एस. एम. जोशी शताब्दि समिती को प्रदान किये इसलिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ ।

पुणे : 21-9-2003

भाई वैद्य

मनोगत

25 सितंबर के दिन मुंबईं अखिल भारतीय स्तर का बॅ. नाथ पै समाजसेवक पुरस्कार प्रो. मधु दंडवतेजीके स्वच्छ करकमलों से मुझे प्रदान किया गया । उसके फलस्वरूप जो दस हजार रुपये मुझे दिये गये, वे एस. एम. जोशी जन्मशताब्दि के लिए प्रदान करने की घोषणा मैंने उसी समारोहमें की । यह धनराशि पुस्तकोंके रुपमें देनेकी योजना बनायीं !

नयी पीढीके विद्यार्थियोंके लिए एस्. एम. जोशीजींके जीवनी की झलक इस छोटीसी पुस्तकके रुपमें प्रस्तुत की । मराठी भाषामें एक हजार और हिन्दी भाषामें एक हजार ऐसी कुल दो हजार प्रतियोंके पाँच रुपये मूल्य के हिसाबसे होनेवाले विक्रयसे दस हजार रुपये एस. एम. जोशी जन्मशताब्दि समिती के पास जमा किये जाएंगे ।

इस हिन्दी पुस्तिका के लिए श्री. भाई वैद्यजीने प्रस्तावना लिखकर दी, उनका मैं कृतज्ञ हूँ । भारती मुद्रणालय के श्री. शिपुरकर परिवार के सदस्य तथा कर्मचारियोंका भी मैं आभारी हूँ । श्री. हसनभाई देसाईजीने एस. एम. जोशीजी का फोटो उपलब्ध कर दिया इसलिए उनको धन्यवाद देता हूँ ।

'ट्रेलर' देखकर मुख्य चित्रपट देखने की प्रेरणा जैसे मिलती है, वैसे यह छोटीसी जीवनीकी झलक पुस्तिका पढ़कर नयी पीढी के पाठक एस्. एम. जोशीजीकी बृहत् आत्मकथा अवश्य पढ़ेंगे ऐसी उम्मीद प्रकट करता हूँ !

एस. एम. जोशी जयंती
12 नवंबर 2003

चन्द्रकान्त पाटगांवकर
कोल्हापुर

संघर्षशील समाजवादी नेता
श्री. एस. एम. जोशी
(जीवनी की एक झलक)

"मै अब विधायक के नाते सरकार से हर महीना मानधन ले रहा हूँ, इसलिए आप कोरगांवकर ट्रस्ट से मेरे नाम पर प्रतिमास जो मानधन अब तक भेजते रहे, उसे कृपया बंद करें । दो-दो स्थानों से मानधन लेना उचित नहीं । मेरे लिए आवश्यक भी नहीं । मैं अपना जीवन सादगीपूर्ण ढंग से बिताना चाहता हूँ । आवश्यकताएँ बढ़ाकर अपना जीवनस्तर बढ़ाना नहीं चाहता । अब तक आपके ट्रस्ट ने जो मेरी आर्थिक सहायता की, उसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ ।" यह पत्र लिखा था, श्रीधर महादेव ऊर्फ श्री. एस. एम. जोशीजीं ने । कोल्हापुर में स्थित श्री गोविंदराव कोरगांवकर ट्रस्ट के द्वारा श्री. प्रभाकरपंत कोरगांवकरजी प्रतिमास महाराष्ट्र के अनेकों सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं की घर-गिरस्थी चलाने के हेतु मानधन भेजते थे । सर्वश्री शंकरराव देव, बाबा आमटे जैसे कार्यकर्ताओं के साथ-साथ श्री. एस. एम. जोशीजी भी मानधन लेते थे । परंतु जिस क्षण मुंबई विधानसभा में विधायक के नाते श्री. एस. एम. जोशी निर्वाचित घोषित हुए और उन्हें विधायक को मिलनेवाला मासिक मानधन सरकार की ओर से प्राप्त होने लगा, उसी क्षण उन्होंने उपरिलिखित पत्र लिखा और कोरगांवकर ट्रस्ट से मिलनेवाला मानधन लेना बंद कर दिया ! इसी नि:स्वार्थी, शीलवान और चारित्र्यवान व्यक्तित्व के कारण ही युवापीढ़ी एस. एम. जोशीजी को सदैव आदर्श के रूप में पूजती रही । इ. स. 1941 में नई पीढ़ी पर जातिधर्म निरपेक्ष राष्ट्रवाद के संस्कार करके स्वातंत्र्यसंघर्ष के लिए सैनिकों का निर्माण करने हेतु जब 'राष्ट्रसेवादल' संगठन की स्थापना हुई, तब उसका नेतृत्व करने के लिए सर्वसम्मति से श्री. एस. एम. जोशीजी की ही 'दलप्रमुख' के पद पर नियुक्ति की गई । राजनीतिक दल में पदाधिकार न स्वीकारने की शर्त दलप्रमुख पद के लिए अनिवार्य बनाई गई थी । ऐसे सभी पदों का मोह दूर हटाकर श्री. एस. एम. जोशीजी ने 1941 से राष्ट्रसेवादल के द्वारा नई पीढ़ी के चारित्र्यगठन की जिम्मेदारी उठाई । 1942 के 'छोड़ो भारत' आंदोलन में वे स्वयं जब कूद पड़े तो हजारों सेवादल सैनिकों ने भी इस स्वातंत्र्ययज्ञ में अपना हविर्भाग समर्पित किया । मजदूर संगठन, किसान संगठन, छात्र संगठन, सहकार, शिक्षा तथा राजनीतिक और सामाजिक जीवन के विविध अंगोंप्रत्यंगों में नि:स्वार्थ भाव से कार्य करनेवाले अनेक कार्यकर्ता सेवादल ने देश को अर्पण किए । 'कार्यकर्ताओं का कारखाना' ऐसा यथार्थ वर्णन एस. एम. जोशीजी का सभी लोग करते थे ।

''मैं एस. एम. जोशी बनना चाहता हूँ'' ऐसी भावना प्रत्येक सेवादल के सैनिक के मन में उनके 1942 के क्रांतिकारी नेतृत्व के कारण उत्पन्न हुई थी। स्वातंत्र्यप्राप्ति के पूर्वकाल में राष्ट्रसेवादल के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिबिर छुट्टियों के दिनों में आयोजित किए जाते थे। ऐसा ही एक शिबिर कोल्हापुर जिले में जयसिंगपुर गाँव में हमने आयोजित किया था। 'भविष्य में कौन बनना चाहता हूँ ?' इस विषय पर शिबिरार्थी स्वयंसेवक अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं को व्यक्त कर रहे थे । मिरज गाँव का युवक श्री. वसंत कोपार्डे बता रहा था, 'अमीर माता-पिता की गोद में पंडित जवाहरलाल नेहरू जी का जन्म हुआ। उन्होंने देश के लिए अमीरी का त्याग किया, उनके प्रति मेरे मन में अत्यंत आदर है। परंतु मेरे जीवन में मेरे आदर्श नेता का स्थान मैं उन्हें दे नही सकता। कारण गरीब माँ-बाप की गोद में मेरा जन्म हुआ है । जन्म से ही गरीबी में प्रतिकूल परिस्थिती के साथ संघर्ष करते हुए जो महान नेता बने हैं ऐसे श्री. एस. एम. जोशीजी ही मेरे जीवन के आदर्श पुरुष हैं। उनका जीवन ही मेरे जैसों के लिए अनुकरणीय जीवन है। उन्ही के चरणचिह्नों पर चलकर मैं अपना भविष्य बनाना चाहता हूँ ।'

अगस्त 1942 से जो 'चले जाओ' आंदोलन शुरू हुआ था, उसका नेतृत्व श्री. एस. एम. जोशी भूमिगत रहकर कर रहे थे। विदेशी, अंग्रेज सरकार ने निर्मम दमनचक्र जारी रखा था । काँग्रेस, देशी रियासतों की प्रजा परिषद, विद्यार्थी संगठन आदि संस्थाओं को विदेशी सरकार ने गैरकानूनी घोषित कर दिया था। फलस्वरूप इन संस्थाओं के कार्य की गतिविधियाँ खुले आम ठप हो चुकी थी। राष्ट्रसेवादल के विशिष्ट शैक्षणिक संविधान के कारण उनकी गतिविधियों पर सरकार बंधन डालने में असमर्थ हो गई थी । हर शाम गाँव-गाँव के खुले क्रीडांगणों पर तिरंगा ध्वज फहराकर राष्ट्रसेवादल के स्वयंसेवक सैकडों, हजारों की संख्या में रोज इकट्ठा होकर खेल-कूद-समूहगीत आदि कार्यक्रमों के द्वारा संगठित हो रहे थे । भूमिगत (अंडरग्राऊंड) जन-आंदोलन चल रहा था, उसका (अबाव्ह ग्राऊंड) 'श्वसनकेंद्र' राष्ट्रसेवादल बन चुका था । गुप्तपत्रक (बुलेटिन्स) तथा गोपनीय संदेश पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य सेवादल सैनिकों की ये वानरसेनाएँ पुलिस को चकमा देकर कुशलतापूर्वक सफल बनाती थी !

श्री. एस. एम. जोशी ऊर्फ 'आण्णा' मुसलमानी पोशाक पहनकर दाढ़ी बढ़ाकर, सफाईदार उर्दू जबान में बातचीत करके 'इमामअली' के रूप में भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे । सर्वश्री डॉक्टर राममनोहर लोहिया, अरुणा असफअली, अच्युतराव पटवर्धनजी के साथ में कार्य करने के लिए हजारीबाग जेल से भागकर जयप्रकाश नारायण भी शामिल हो गए थे । मुंबई स्थित 'मूषकमहल' में सर्वश्री एस. एम. जोशी, नानासाहेब गोरे, साने गुरुजी, शिरुभाऊ लिमये, मधु लिमये आदि भूमिगत कार्यकर्ता पुलिस की

नजरों से बचाकर गुप्त निवास करके कार्य का संचालन करते थे । मूल अंग्रेजी तथा हिंदी में लिखे हुए गोपनीय गुप्तपत्रकों का (बुलेटिन्स) मराठी मे अनुवाद साने गुरुजी करते थे । 'क्रांतिकारी' नाम के इन गुप्तपत्रकों में आंदोलन की गतिविधियों की जानकारी एवं मार्गदर्शक सूचनाएँ कार्यकर्ताओं के लिए दी जाती थीं । इन पत्रकों को गाँवगाँव के गली-मुहल्ले में पहुँचाने के कार्य में सेवादल के सैनिक सहायता प्रदान करते थे । ऐसे सभी भूमिगत नेतओंको पकड़ने के लिए सरकार निरपराध जनता को सताती थी । ऐसे सभी भूमिगत नेताओं के प्रति एक तरह का 'थ्रिल' युवा पीढ़ी के मन में उत्पन्न हुआ था । एस. एम. उर्फ अण्णा तो सेवादल सैनिकों के 'गले का हार' बन चुके थे !

एस. एम. अद्याक्षर थे, श्रीधर महादेव का अंग्रेजी संक्षिप्त रूप । उनके परिवारवाले मूलत: निवासी थे महाराष्ट्र के कोंकण विभाग के रत्नागिरी जिले में स्थित गोळप गाँव के । महाराष्ट्र के सह्यगिरी के पश्चिमी ढलान पर कोंकण प्रदेश बसा है । इस कोकण ने देश को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, शिक्षणमहर्षी भारतरत्न धोंडो केशव कर्वे, रँगलर र. पु. परांजपे, चिंतामण द्वारकानाथ देशमुख जैसे महान नररत्न प्रदान किए हैं । इसी परंप्रा में इसी रत्नभूमि ने एस.एम. जोशी तथा नानासाहेब गोरे जैसे नेता देश को अर्पण किए हैं । स्वामी स्वरूपानंद के कारण रत्नागिरी जिले का पावस गाँव तीर्थस्थल बन गया है, इसी पावस गाँव के पडोस में ही गोळप गाँव बसा हुआ है । सरकारी नौकरी के कारण पिताजी जुन्नर, जिला पुणे में रहते थे । 'नाजिर' के ओहदे पर जुन्नर में जब वे काम करते थे, तब 12 नवंबर 1904 के दिन एस. एम. जोशी का जन्म हुआ । मगर उनकी प्रारंभिक पाठशाला का श्रीगणेश गोळप गाँव में ही हुआ । 'धूलपाटी'पर धूल में अक्षर अंकित करके ही परिपाटी के अनुसार उनकी शिक्षा का प्रारंभ हुआ । घर की हालत आम तौर पर गरीबी की रही । शिक्षाप्राप्ति के लिए बचपन में उन्हें गाँव-गाँव में भ्रमण करना पड़ा । गोळप से वे जुन्नर गए । जुन्नर से फिर नागपुर जाना पड़ा । नागपुर में पाठशाला की तीन महीनों की फीस न भर सकने के कारण उनका नाम स्कूल से हटाया गया । अब क्या किया जाए ? मुंबई तक प्रवास खर्च के लिए जैसे-वैसे पैसे जोड़कर वे मुंबई पहुँच गए । वहाँ से फिर उन्हें पुणे आना पड़ा । पुणे में श्री भागवत जी के प्रयत्नों से सप्ताह के सातो दिन सात अलग-अलग घरों मे भोजन की व्यवस्था की गई । शिक्षणक्रम शुरू हुआ । ज्येष्ठ बंधु दादासाहेब ने चाचा श्री. गोविंदराव जोशीजी के घर में 'आश्रयार्थी' के नाते रहने का प्रबंध किया। घर के सभी कामकाज में वे हाथ बँटाने लगे । कुएँ में से पानी निकालकर लाना, चिरागदान के काँच साफ करना, भोजन की पंक्तियों की पूर्व तैयारी करना आदि घरेलू काम करते हुए उन्होंने अपने अध्ययन की तपश्चर्या जारी रखी । पितृछाया खो जाने के बाद उनके सामने कोई अन्य मार्ग बचा ही नहीं था ।

पुणे में रमणबाग स्कूल में अंग्रेजी पहली कक्षा में प्रवेश पाने के बाद प्रथम तिमाही परीक्षा में अपनी कक्षा में अव्वल आए । फ्री स्टूडंटशिप के लिए उन्होंने अर्जी दी । अध्ययन में तेज होने के कारण उनकी फीस माफ हुई । नागपुर में फीस न देने के कारण उनका नाम स्कूल से हटा दिया गया था । अपनी अध्ययनशीलता तथा गुणवत्ता के बल पर अपनी शिक्षा उन्होंने फिर से शुरू की । 'मैं एस. एम.' नाम के अपने आत्मकथन में उन्होंने लिखा है, ''इस तरह मेरा जो शिक्षण खंडित हुआ था, उसे मैंने बिना फीस दिए अपनी गुणवत्ता के बलबूते पर लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित शिक्षणसंस्था में बी.ए. तक पूर्ण किया !'' आगे चलकर उन्होने एलएल.बी. की उपाधि भी सफलतापूर्वक प्राप्त की ।

भविष्य में जो भारत के साहित्य, राजनीति, न्यायदान आदि कार्यक्षेत्रों में चोटी के स्थान प्राप्त कर गए, ऐसे उनके सहपाठी थे । कोई वर्गमित्र रह चुके तो कोई आगे-पीछे ऐसे पाठशाला के साथी रह चुके हैं । उनमें सर्वश्री गोपीनाथ तळवलकर, गं. भा. निरंतर, तारकुंडे जी, रघुनाथराव खाडिलकर, नानासाहेब गोरे, शिरुभाऊ लिमये आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । शालेय जीवन से ही भारत देश की स्वतंत्रता के विचार इन सब मित्रों के मनों में बार-बार उठते थे । सब मिलकर इस विषय पर आपस में चर्चाएँ करते थे । लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गांधीजी के नेतृत्व का प्रभाव उन दिनों इन छात्रों पर पड़ा हुआ था । चौथी कक्षा के बाद मैट्रिक की परीक्षा तक यह प्रभाव धीरे-धीरे कम होता गया । अपनी आत्मकथा में एस. एम. तथा अण्णा जी ने लिखा है कि अगर यूसुफ मेहरअलीसाहब की मुलाकात न होती तो शायद वे सब कट्टर संप्रदायवादी कार्यकर्ता बन जाना संभव था ।

1925 में अण्णाजी ने फर्ग्युसन कॉलेज में प्रवेश किया । तब से खादी कपडे पहनने का व्रत जो उन्होंने लिया उसे अंत तक छोड़ा नहीं । विदेशी कपड़ों में शोषण रहता है । इसलिए जिसमें कम-से-कम शोषण होगा ऐसा ही वस्त्र पहनने का प्रण उन्होंने किया । इसी विचारधारा के अनुसार अण्णाजी ने खादी वस्त्र पहनना जो शुरू क्रिया उसे अंत तक निभाया । गांधीजी कहते थे, 'खादी केवल वस्त्र नहीं, वह एक विचार है ।' इसपर अण्णाजी ने अमल किया ।

छात्रावस्था में पुणे में वे 'यूथलीग' के क्रियाशील कार्यकर्ता बने । यूथलीग के द्वारा समय-समय पर आयोजित परिषदों में पंडित जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस आदि के विचारों से वे प्रभावित हुए । देशभर में 'सायमन कमिशन' पर काँग्रेस द्वारा बहिष्कार डाला गया । पुणे में भी बहिष्कार के निमित्त सभाएँ हुईं, जुलूस निकले । पुणे के शिवाजी मंदिर में एस. एम. जोशीजी का भाषण हुआ । यह उनका पहला सार्वजनिक भाषण था ।

आगे चलकर पुणे में 'युवक परिषद' का आयोजन हुआ और उसके लिए अध्यक्ष के नाते यूसुफ मेहेरअलीजी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को आमंत्रित किया था । पंडितजी

पुणे में श्री. काकासाहब गाडगीळजी के घर पर ठहरे थे । पंडितजी के विचारोंका प्रभाव सभी युवकोंपर पड़ा था । युवा पीढ़ी के और जवाहरलालजी के विचार बिलकुल मिलते-जुलते थे । एस.एम. काकासाहबजी के घर जवाहरलालजी से मिलने गए । काकासाहब ने एस. एम. का परिचय पंडितजी को करा दिया और कहा ''ये एस. एम. जोशीजी हैं । पुणे के 'जवाहरलाल नेहरू' बनने की उनकी महत्वाकांक्षा है ।''

पंडितजी हँस पडे और बोले,

''बस, इतनी छोटी-सी महत्वाकांक्षा ?''

राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक समता का भी संघर्ष हमें करना चाहिए ऐसा संदेश महात्मा गांधीजी पूरे देश को दे रहे थे । चौदह सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम में अस्पृश्यता निवारण के कार्य को उन्होंने अग्रक्रम दिया था । उसके अनुसार जगह-जगह हरिजनों के लिए मंदिर प्रवेश के सत्याग्रह आयोजित होने लगे । पुणे में इतिहास प्रसिद्ध 'पर्वती मंदिर' भी हरिजन बंधुओं के लिए खुला कराने के हेतु एस. एम. जोशी अपने बीस - पचीस युवक साथियों को साथ लेकर सत्याग्रह के लिए निकल पड़े । पर्वती की सीढियों पर ही पुणे के सनातनी पुरोहितों ने उन्हे रोका । उनकी तुलना में सत्याग्रही संख्या में कम थे। सत्याग्रहियों को सीढ़ियों के नीचे कँटीली झाडियों में ढकेल दिया गया । मंदिर तक उन्हें पहुँचने ही नहीं दिया गया !

मंदिरप्रवेश के विरोध में पुणे शहर में 'तुलसीबाग' में सतातनी मंडली ने एक प्रचारसभा आयोजित की । 'भाला'कार श्री. भोपटकरजी का भाषण हुआ । एस. एम. जोशी अपने युवक साथियों को लेकर सभा में उपस्थित रहे । भोपटकरजी ने कहा, 'हम हिंदू लोक अपने घर की महिलाओं के साथ भी 'अस्पृश्यता' का पालन करते हैं । हर महीने तीन दिनों तक हमारी स्त्रियों के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार करते है ।'' श्रोता लोगों ने खिलखिलाकर खूब तालियाँ पीटीं । एस.एम.से रहा नहीं गया । हँसी और तालियों की ध्वनि कम हो जाने पर हाथ ऊपर उठाकर उन्होंने वक्ता से सवाल किया, ''महीने में तीन दिनों तक अपनी घर की स्त्रियों को आप 'अस्पृश्य' समझकर दूर रखते है, यह आपने कहा, परंतु चौथे दिन से आप उनको कितने करीब लाते हैं, यह नहीं बताया ।''

बस ! यह सवाल पूछना ही था । सभा में हंगामा मच गया ! सनातनी कार्यकर्ता क्रोध से एस. एम. जोशी पर हमला करने के हेतु टूट पड़े । अब अपनी खूब पिटाई होगी, इस बात को एस. एम. ने जान लिया और जान बचाने के लिए भाग निकले ! उनका पीछा करनेवालों ने उन्हें पकड़ने की कोशिश की । हाथापाई में एस. एम. की धोती का छोर सनातनियों के हाथों में आया ! इतने में सदुभाऊ गोडबोले नाम के मित्र एस. एम. जोशी को बचाने के लिए दौड़ते आए । वे ऊँचेपूरे महाकाय और बलदंड थे । उन्होंने एस. एम.

को ऊपर उठाकर अपने कंधोंपर बिठा लिया और महावीर हनुमान की तरह बिजली की चपलता से भीड़ में से अदृश्य हो गए !

इस अनुभव के बाद एस. एम. ने धोती पहनना बंद किया और खादी का नाड़ीवाला पैजामा पहनना शुरू किया । बुढ़ापे तक वे पैजामा ही पहनते रहे ।

यह रहा उनका पहला असफल सत्याग्रह ! मगर उनका दूसरा सत्याग्रह सफल हुआ और उसके लिए उन्हें कारावास की सजा भी मिली । 1930 मार्च में महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में 'दांडी यात्रा' के बाद नमक कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ । भारत भर में सर्वदूर ऐसे सत्याग्रह हुए । महाराष्ट्र के नेता श्री. शंकररावजी देव के आदेशानुसार श्री. वामन परांजपेजी के साथ एसेम ने अलीबाग गाँव में सत्याग्रह की सभा आयोजित की । दोनों को पकड़ लिया गया । दूसरे दिन न्यायाधिश महोदय ने छ: महीनों के कारावास की सजा फरमाई । बी क्लास मिला । ठाणे जेल में दोनों को बंद किया गया । यह एसेम का पहला कारावास था !

मगर इसके बाद एसेम की जीवनयात्रा में जेलयात्रा एक अभिन्न अंग बन गई । एलएल. बी. की परीक्षा पास होकर वकालत की सनद प्राप्त की । कॉमरेड मानवेंद्र नाथ राय को पकड़कर सरकार ने उनको जेल में डाल दिया । इसके विरोध में एसेम ने जो भाषण दिया, वह अत्यंत प्रक्षोभक साबित हुआ । अपने भाषण में फ्रेंच राज्यक्रांति का जिक्र करते हुए फ्रेंच जनों ने बॅस्टील जेल तोड़कर क्रांतिकारियों को कैसे मुक्त किया उसका उदाहरण दिया । जनता को सरकार के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने के लिए भड़काने के जुर्म में एस. एम. को दो साल की सश्रम कारावास की सजा फरमाई गई ! भायखला सुधारगृह और बाद में आर्थर रोड जेल में उनको बंद किया गया । शुरू में मिला था 'बी' क्लास मगर बाद में 'सी' क्लास दिया गया । साबरमती जेल में तबादला हुआ ! वहाँ की कड़ी धूप और जेल की चार दिवारी के अंदर उठाए गए असह्य शारीरिक कष्ट आदि के फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य गिर गया । शारीरिक तथा मानसिक यंत्रणाओं के कारण उनका वजन 103 पौंडों तक नीचे उतर गया । एक अगस्त 1936 को उनकी मुक्तता हुई । परंतु वे विश्राम करने अपने घर नहीं गए, बल्कि महाराष्ट्र के फैजपुर गाँव में होनेवाले आखिल भारतीय काँग्रेस के पहले देहाती अधिवेशन में स्वयंसेवक के नाते काम करने में जुट गए !

दरमियान के कालखंड में सार्वजनिक कार्य और जेलयात्रा के कष्टमय रास्ते में प्यार-मोहब्बत की हरियाली का भी एक अध्याय शुरू हो चुका था ! एस. एम. जैसे तेजस्वी युवा नेता की ओर कोई भी युवती आकर्षित हो सकती थी । सुश्री ताराबाई पेंडसे ऐसी ही संपन्न परिवार की एक युवती धीरे-धीरे एस. एम. के संपर्क में आ रही थी । सभा - सम्मेलनों में बातें होने लगीं । मुलाकातें बढ़ने लगीं । विविध विषयों पर पढ़ने लायक

पुस्तकों की लेन-देन होने लगीं । पुस्तकों के आदान-प्रदान के साथ दोनों के दिलों की भी लेन-देन कब हो गई इसका पता भी नहीं चला ! मगर एस. एम. ने अपने मन पर संयम रखा । आजादी की जंग में कूद पडनेवालों की जिंदगी में प्यार-मोहब्बत के लिए फुरसत कहाँ ? एक पाँव घर में और दूसरा पाँव जेल में, ऐसी अपनी फकीर की जिंदगी ! एस. एम. ने ताराबाई को सचेत किया । उससे मिलना-जुलना भी टालना शुरू किया । अपने कष्टमय जीवन की आँच से उसे दूर रहने का उपदेश दिया । परंतु इस विश्वसंचारी 'महेश' की प्राप्ति के लिए इस 'उमा' ने एकनिष्ठ तपस्या की साधना शुरू की । अंतत: तप का फल मिला । सभी साथियों और मित्रों की सहायता से दोनों जीवनसाथी बने !

ताराबाई का मायके का जीवन संपन्न परिवार का था । 'ज्ञानप्रबोधिनी' के संस्थापक डॉ. अप्पा पेंडसेजी की वे भगिनी थीं । विचारपूर्वक उन्होंने कष्टमय जीवन का स्वीकार किया । एस. एम. हमेशा सार्वजनिक कार्य में व्यस्त रहेंगे इस यथार्थ वास्तवता को स्वीकार करके घरगिरस्थी चलाने की जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं अपने कंधों पर उठाई । स्कूल में शिक्षिका की नौकरी वे करने लगीं । एस. एम. की ध्येयपूर्ती में अंत तक साथ निभाया । दस दिन घर में तो दस महीने जेल में ऐसी एस. एम. की जीवनयात्रा चली ! जेल की चार-दीवारी के अंदर कष्टमय जीवन में उनका स्वास्थ्य हमेशा बिगड़ता रहा । कभी भी शिकायत न करते हुए पति की और अपने बच्चों की सेवा ताराबाई करती रहीं । स्कूल से घर आने पर दरवाजे के बाहर प्रतीक्षा करते-करते सोए हुए छोटे अजय को उठाकर प्यार से गले लगाती थीं । फिर ताला खोलकर घर में खाना पकाने में लग जाती थीं । हमेशा हँसमुख रहकर अपनी गिरस्थी उन्होंने चलाई । इसलिए घरगिरस्थी की कोई चिंता एस. एम. को करनी नहीं पड़ी । देशसेवा के कार्य के लिए वे पूर्णरूप से अपना जीवन समर्पित कर सके । दुनिया के हर महापुरुष के सफल जीवन के पीछे उसकी घरवाली का अदृश्य योगदान रहता है !

मैंने एस. एम. को पहली बार देखा 1946 के मई महीने में । महाराष्ट्र के औंध रियासत के किन्हई नाम के देहात में राष्ट्रसेवादल का प्रशिक्षण शिबिर चल रहा था । औंध के राजपुत्र बॅ. अप्पासाहब पंत का छोटा भाई हमारे साथ शिबिरार्थी था । सुश्री मेघा पाटकर के पिताश्री वसंत खानोलकर भी हमारे साथ शिबिरार्थी थे । श्री. वि. म. हर्डिकर शिबिरप्रमुख की हैसियत से शिबिर का संचालन कर रहे थे । जेल से रिहा होते ही एस. एम. शिबिर में आए थे । बौद्धिक मार्गदर्शन शिबिरार्थियों को उन्होंने दिया । शिबिर समाप्त होते ही उनके साथ मैं कुंडल गाँव में गया । क्रांतिसिंह श्री. नाना पाटील के प्रतिसरकार द्वारा चलाए गए ग्रामराज्यों की 'राजधानी' कुंडल थी । रात को लाड बंधुओं के साथ एस. एम. साईकिल पर सवार होकर प्रतिसरकार के ग्रामराज्यों का प्रयोग देखने गए । बाद में हम दोनों कुंडल से मिरज के पासवाले आरग नाम के गाँव में पहुँचे । वहाँ बॅ.

जी. डी. पाटीलजी ने राष्ट्रसेवादल का स्वयंसेवक शिविर आयोजित किया था । इस शिविर के संचालन की जिम्मेदारी इचलकरंजी के सेवादल कार्यकर्ता श्री. सदाशिवराव सुलतानपुरे और मुझपर सौंपी गई थी । शिविर के स्वयंसेवकों के सामने एस. एम. का भाषण हुआ । 'छोडो भारत' आंदोलन अबतक सफल नहीं हुआ है । फिर एक बार देश के स्वातंत्र्य के लिए संग्राम होनेवाला है । उसके लिए स्वातंत्र्य सैनिकों की सेना तैयार करने के लिए गाँव-गाँव में सेवादल का कार्य बढ़ाना है !'' एस. एम. का भाषण समाप्त हुआ । सभी स्वयंसेवक उससे प्रभावित हुए थे ।

इतने में कोल्हापुर से श्री. गजानन घाटे नाम का स्वयंसेवक दौड़ते हुए आया और उसने सबके सामने एक खुशखबर सुनाई !

''मुंबई यूनिवर्सिटी का बी. ए. का रिझल्ट जाहिर हुआ है और उसमें चंद्रकांत पाटगांवकर उत्तीर्ण हुआ है !''

एस. एम. जी ने सबके सामने मेरा जाहिर अभिनंदन किया और कहा, ''अब तू गॅज्युएट बन गया है । देश के स्वातंत्र्य के लिए और भी लड़ना है । इसलिए अब तू राष्ट्र सेवादल के पूर्ण समय कार्यकर्ता के नाते कार्य शुरू कर !''

स्वतंत्रता के यज्ञकुंड में अपनी जीवनसमिधा समर्पित करनेवाले त्यागी एस. एम. जोशीजी का वह आदेश मैंने शिरसावंद्य मानकर स्वीकृति दे दी । इ.स.1946 से 1950 मई तक पूरे चार साल राष्ट्रसेवादल के पूर्ण समय कार्यकर्ता की हैसियत से मैने देशकार्य किया । इ. स. 1946 से 1948 तक कोल्हापुर का प्रथम जिला संघटक बनकर मैंने कार्य किया । इ. स. 1947 फरबरी की सातारा रॅली में शरीक हुआ ।

एस. एम. के साथ इसी कालखंड में कोल्हापुर जिले के गाँव-गाँव में मैं गया । सेवादल के शाखा केंद्रों पर स्वयंसेवकों से बातचीत करने के बाद इन स्वयंसेवकों के घरों में वे आग्रहपूर्वक जाते थे । उनके माता-पिताओं से गपशप करने में शरीक होते थे । उनके घर की रूखी-सूखी रोटी उनके साथ बैठकर खाने में आनंद का अनुभव लेते थे । इतना बड़ा क्रांतिकारी नेता अपनी झोपड़ीनुमा घर में आता है, इसका परिणाम सामान्यजनों पर बहुत पड़ता था । आत्मीयता का भाव उत्पन्न हो जाता था । एस. एम. उनको अपनेमें से ही एक है ऐसा उन्हें महसूस होता था । कुछ नेतागण सामान्य जनता से कुछ अंतर हमेशा रखना पसंद करते थे । ऐसा 'अंतर' रखने से अपना रोब और आब कायम रखना चाहते थे । यह 'डिस्टंन्स थियरी' एस. एम. को नामंजूर थी ! जनता और सामान्य कार्यकर्ताओं से विशिष्ट दूरी का अंतर रखकर अपनी 'नेतृत्व की' धाक जमाना उनको अच्छा नही लगता था । 'आम' जनता में 'खास' बनकर रहना उन्हें पसंद नहीं था । सीधा सादा सामान्य जीवन बिताना ही उनकी जीवननिष्ठा थी । ऐसा 'सामान्य' जीवन बिताकर भी वे 'असामान्य' बने

रहे !

उनके इस आचरण में कृत्रिमता का अंशमात्र भी नहीं था । पुणे के सदाशिव पेठ वाले उनके घर में जाने का सौभाग्य अनेकों कार्यकर्ताओं की तरह मुझे भी मिला था । मित्रतापूर्ण प्रेम का बरताव वे सबके साथ सहजभाव से करते थे । अण्णाजी तथा ताराबाई दोनों भी हमारी पूछताछ आत्मीयता से करते थे । हमारी सामाजिक और व्यक्तिगत समस्याओं में भी वे मार्गदर्शन करते थे । उनका घर हमें अपना घर जैसा ही जँचता था । एक बार का किस्सा है - उनके सुपुत्र डॉ. अजयजी के घर में अण्णाजी से मिलने मैं गया । वे चिउरा खा रहे थे । मुझे देखते ही पूरा डिब्बा मेरे सामने उन्होंने धरा और अपने हाथ से मुठ्ठी में चिउरा लेकर खाने के लिए आग्रह क्रिया । मेरा संकोच उन्होंने दूर किया । मैं भी उनके साथ चिउरा खाने में शरीक हो गया । पौराणिक कथाओं में गोपालकृष्ण अपने बालगोपाल साथियों के साथ मिलकर जो गोपालकाला खाता था, उसका मुझे स्मरण हो आया !

जो आदेश अपने अनुयायियों को वे देते थे, उसपर वे स्वयं अमल करके आजमाइश कर लेते थे । खुद स्वयं कोई कार्यक्रम पर अमल करने के बाद ही वे दूसरों को उस कार्यक्रम पर अमल करने का आदेश देते थे । मुंबई के साथ संयुक्त महाराष्ट्र मराठी भाषिक जनता को मिलना चाहिए इस माँग के लिए जनसंघर्ष का नेतृत्व एस. एम. ने किया । मगर अमराठी भाषिक बंधुओं का द्वेष करने की आवश्यकता नहीं, उल्टे उनके प्रेम और सहयोग के बल पर अपना भाषिक राज्य हम खड़ा करेंगे ऐसी सीख उन्होंने कार्यकर्ताओं को सिखाई । अन्य भाषिकों के साथ प्रेम और अहिंसा का उपदेश वे अपनी जान का खतरा मोल लेकर भी अंमल में लाए ।

इसी संदर्भ में एक दिल दहलानेवाला प्रसंग ! मुंबई में संयुक्त महाराष्ट्र का आंदोलन जोरों-शोरों पर था ! मराठी भाषिक लोगों का जुलूस, नारे देता हुआ दादर में रास्ते पर से गुजर रहा था । भारत की अन्य भाषिक जनता को अपने-अपने भाषानुसार राज्य मिले । मराठी और गुजराती दोनों भाषिक जनता को, जबरदस्ती से एक मुंबई द्विभाषिक राज्य में बाँध दिया था ! मराठी जनता में असंतोष बढ़ गया था । जुलूस में भीड़ बढ़ रही थी । उसको नियंत्रण में रखने के लिए दादर स्टेशन के बाहर पुलिस इन्स्पेक्टर श्री. अडवाणी कोशिश कर रहे थे । भीड़ बेकाबू हो गई थी । इन्स्पेक्टर अडवाणी चारों ओर से पूरी तरह भीड़ से घेर लिए गए थे । उनकी जान को खतरा पैदा हुआ था । एस. एम. को इस बात की जानकारी किसी ने आकर दी । अचानक बिजली की तरह एस. एम. भीड़ के सामने आकर खड़े हुए । गरजकर बोले, ''खबरदार कोई आगे बढ़ा तो । इन्स्पेक्टर अडवाणी अपने भाई हैं । उनपर हमला करने से पहले तुम्हें मुझपर हमला करना पड़ेगा !'' उन्होंने इन्स्पेक्टर अडवाणी को इशारा करके वहाँ से सुरक्षित निकलने दिया । एस. एम. के उस

रौद्र रूप के आगे भीड़ अपनी जगह पर ठिठककर रह गई ! ऐसा था एस. एम. का नैतिक नेतृत्व का प्रभाव ! इन्स्पेक्टर अडवाणी की जान बच गई । संयुक्त महाराष्ट्र का आंदोलन रक्तलांछित धब्बा लगने से बच गया !

हाल ही में मुंबई में 105 महाराष्ट्रीयनों की पुलिस की गोलियों से निर्मम हत्या हुई थी । इन हुतात्माओं के बलिदान की वार्ता से मराठी जनता प्रक्षुब्ध हो उठी थी । परंतु इस प्रक्षुब्ध जनता पर एस. एम. ने नियंत्रण रखा । हिंसा और खून-खराबा करने से जनता को रोका । मराठी भाषिकों का राज्य अहिंसा और प्रेम के बलबूते पर तथा अन्य भाषिकों का द्वेष न करते हुए उनके सहयोग से ही स्थापन होना चाहिए ऐसा उनका उपदेश था । इससे संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन की गरिमा बढ़ गई । एस. एम. जोशी का नैतिक नेतृत्व निखर उठा । सभी भाषिक जनता के हृदय में एस. एम. का नेतृत्व राष्ट्रीय नेतृत्व के बुलंद शिखर पर आरूढ़ हुआ !

सभी राजनीतिक दलों में एस. एम. जोशी के सात्विक, चारित्र्यसंपन्न एवं नीतिमान नेतृत्व के प्रति आत्यंतिक आदर का भाव निर्माण हुआ । उनका त्याग, सत्यनिष्ठा, अहिंसा और प्रेम पर विश्वास, नि:पक्ष एवं नि:स्वार्थ स्वभाव आदि सद्गुणों के प्रति सार्वत्रिक पूज्य भाव प्रकट हुआ । पारदर्शी स्वभाव, निर्मल अंत:करण और ऋषितुल्य जीवन का महान आदर्श एस. एम. जोशीजी के रूप में भारत को मिला !

महात्मा गांधीजीकी हत्या महाराष्ट्र के एक ब्राह्मणने की, इसकी तीव्र प्रतिक्रिया पूरे महाराष्ट्र राज्यभरमें बहुतही भयानक रूप धारण कर रही थी । जगह जगह ब्राह्मणों के घरोंको आग लगानेका सिलसिला शुरू हुआ। ऐसे माहौलमें राष्ट्रसेवादल के सैनिकोंको शांतता प्रस्थापित करनेका आदेश दिया गया। अनेक गावोंमे सेवादल सैनिकोंने जनता के क्रोधको शांत करनेकी भरसक कोशिश की। कोल्हापूर जिले के गडहिंग्लज गाँव में सेवादल सैनिक श्री. सिद्धाप्पा मायाप्पा रानगेने अपने प्राण संकटमें डालकर ब्राह्मणों के घरोंको आगजनी से बचानेका प्रयत्न किया । पूजनीय साने गुरूजीने और एस्. एम. जोशीजीने सिद्धाप्पा रानगेका जाहीर अभिनंदन किया ! उसका अनुकरण करनेकी प्रेरणा अन्य सेवादल सैनिकोको दी !

लोकनायक जयप्रकाश नारायणजी के प्रति एसेम के मन में अपार श्रद्धा का भाव था । एसेम के प्रति जे. पी. के मन में पूर्ण विश्वास की भावना थी ।1934 में नासिक जेल में काँग्रेस समाजवादी दल की स्थापना से जे. पी., आचार्य नरेंद्र देव, अच्युतराव पटवर्धन, नानासाहेब गोरे, डॉ. राममनोहर लोहिया आदि सब मिलकर भारत में समाजवाद की स्थापना के प्रयत्नों में एस. एम. जोशी के साथी रहे । स्वातंत्र्यप्राप्ति के बाद और विशेषकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की हत्या के बाद समाजवादी दल काँग्रेस से अलग हुआ ।

फिर आचार्य श्री कृपलानीजी के प्रजापक्ष के साथ मिलजुलकर प्रजासमाजवादी दल की स्थापना हुई । उसका वार्षिक अधिवेशन बिहार में पटना में संपन्न हुआ । आचार्य नरेंद्र देवजी अध्यक्षपद के लिए और जयप्रकाश नारायण सचिवपद के लिए निर्वाचित हुए । समाजवाद के संस्कार नई पीढ़ी पर करने के लिए 'युवासंगठन' की बैठक में जयप्रकाशजी ने मार्गदर्शन करते हुए कहा, ''साथी एस. एम. जोशीजी ने महाराष्ट्र में जनतांत्रिक समाजवाद के संस्कार नई पीढ़ी पर करने के लिए 'राष्ट्रसेवादल' का संगठन खड़ा किया है । मैं चाहता हूँ, ऐसा ही संगठन हर प्रांत में पैदा हो और उसे खड़ा करनेवाले एस. एम. जोशी हर प्रांत में पैदा हो।'' आगे चलकर जयप्रकाशजी ने जब 'संपूर्ण क्रांति' का आंदोलन खड़ा किया तो उसमें एस. एम. ने पूरी तरह सहयोग दिया । जे. पी. को जो राष्ट्रीय निधि समर्पित किया गया तो उस निधि की न्यासी समिति पर जे. पी. ने एस. एम. को मनोनीत किया । एक समय तो 'राष्ट्रपति पद' के लिए एस. एम. का नाम जे. पी. ने सुझाया । अर्थात राजसत्तापद के मोह से सदैव दूर रहनेवाले एस. एम. ने नम्रतापूर्वक इन्कार किया । संयुक्त महाराष्ट्र समिति के वे सचिव थे । परंतु उन्होंने जाहिर किया कि संयुक्त महाराष्ट्र के निर्माण के बाद राजसत्ता के किसी भी पद को वे ग्रहण नहीं करेंगे । 'संयुक्त महाराष्ट्र' के निर्माण के श्रेय के 'मंगल कलश' के लिए कभी उन्होंने दावा नहीं किया । जनता के त्याग को और शहीदों के बलिदान को यह श्रेय उन्होंने अर्पण किया !

जयप्रकाशजीने दूसरी एक समस्या की जिम्मेदारी एस. एम. पर सौंप दी । उसे निभानेकी एस. एम. ने भरसक कोशिश की । भारत राष्ट्र को अखंड तथा एकात्म रखनेकी वह समस्या थी नागभूमि की । 1977 में जनता पक्ष की सरकार दिल्लीमें 'सत्तामें' आयी । जयप्रकाशजीने एस. एम. जोशीको नागालँडमें भेज दिया । वहाँ बुजुर्ग नेताओंके साथ साथ युवकोंके साथ भी एस. एम. ने बातचीत की । नागमण्डलीने भी अपनी माँगे एस. एम. के सामने रख दी !

वहाँ आदिवासियोंके पंचायती राज का कारोबार कैसे चलता है, इसकी भी एस्. एम्. ने जानकारी प्राप्त की । भारतसे अलग होकर स्वतंत्र नागभूमि की स्थापना न करके भारतीय संघराज्यके अंदर ही एक स्वायत्त घटक राज्य के रूपमें रहनेमेंही नाग लोगोंका कैसा हित है यह बात समझानेकी पूरी कोशिश एस. एम. ने की । परन्तु उन नागनेताओंने उस को स्वीकृती नही दी ।

नागलोगों के नेता श्री. फिझो 1957 से इंग्लैंडमें निवास रखे हुए थे । एस. एम. जोशी 1979 के अप्रैल में लन्दन पहुँचे । वहाँ श्री. नानासाहब गोरेजी इंग्लैंड में भारत के हायकमिशनर के पदपर कार्यभार सम्हल रहे थे । इसलिए श्री. नानासाहब के निवासस्थानपर ही 9 अप्रैल तथा 12 से 17 अप्रैल पूरे पाँच दिन ऐसी कुल छः बार एस. एम. और

नानासाहब की श्री. फिझो के साथ चर्चाएँ संपन्न हुई । उसके बाद 27 अप्रैल को श्री. फिझोने 'इंडियन एक्स्प्रेस'को जो इंटरव्यू दिया उसमें स्वतंत्र और संप्रभु नागभूमि ऐसा शब्दप्रयोग उन्होने नहीं किया । इसके पश्चात् लगभग पाँच सालतक नागभूमीमें कोईभी हिंसाचार हुआ नहीं । एस. एम. जोशीजीकी नागनेता श्री. फिझो के साथ जो मुलाकातें हुई उनकी यह मर्यादित ही क्यो न हो, फलश्रुति मिली, ऐसा मानना अनुचित नहीं होगा !

सत्ता की अपेक्षा सेवा में रममाण होना ही एस. एम. के जीवन का स्थायी भाव रहा । आदरणीय साने गुरुजी के निर्वाण के बाद उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार 'साने गुरुजी सेवा पथक' खड़ा किया गया । पूरे एक्र सालभर में महाराष्ट्र के गाँव-गाँव में जाकर सेवापथक के स्वयंसेवकों ने अपने देहाती भाइयों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर 'श्रमदान' किया । जोड़-रास्ते, स्कूल के क्रीडांगण, पानी के कुएँ आदि सार्वजनिक सेवाकार्य संपन्न हुए । अपने युवा साथियों के साथ साथी एस. एम. जोशी पूरे वर्षभर इस सेवापथक को लेकर देहातों में धूमते रहे ।'

स्वातंत्र्यप्राप्ति के संग्राम में जैसे विदेशी अंग्रेजी सरकार के जेल में वे गए, वैसे स्वातंत्र्यप्राप्ति के बाद महँगाई एवं जीवनावश्यक वस्तुओं की दरवृद्धि विरोधी जनआंदोलन ने सत्याग्रह करके स्वकीय सरकार के जेल में भी वे गए ! गरीब जनता के लिए संघर्ष में वे कूद पड़े । गांधीजी के वे सच्चे अनुयायी रहे । वे हमेशा कहा करते थे, 'गांधी विचार दो पाँवों पर खड़ा है । एक 'रचना' और दूसरा 'संघर्ष' । विषमता और अन्याय के विरोध में संघर्ष करना और संघर्ष करते-करते विधायक कार्यक्रमों के द्वारा नवसमाज रचना का निर्माण कार्य खड़ा करना । केवल 'रचना' पर जोर देकर यदि संघर्ष की उपेक्षा करेंगे, तो गांधी विचार लंगड़ा हो जाएगा।'

जनतंत्र में चुनाव होते हैं । पुणे की विधान सभा के चुनाव में एसेम खड़े हुए । चुनाव प्रचार में व्यक्तिगत निंदा नहीं होनी चाहिए । विपक्षी उम्मीदवारों के प्रति स्नेहभाव कायम रखकर अपने सिद्धांतों के विचारों का प्रचार करना चाहिए, ऐसा उनका आग्रह था । चुनाव में एसेम विजयी हुए । हारे हुए विपक्षी उम्मीदवार से वे स्वयं जाकर मिले । विजय का स्वीकार विनम्रता से किया !

फावड़ा, जेल और मतपेटी ऐसी 'त्रिसूत्री' डॉ. राममनोहर लोहिया ने भारतीय जनता के सामने रखी थी ! एसेम के जीवन में इस त्रिसूत्री का संगम पाकर डॉक्टर लोहियाजी ने एसेम का अभिनंदन करते हुए 'आदर्श नेता' के रूप में उनको अभिवादन किया । 'फावड़ा' हाथ में लेकर पूरे सालभर वे साने गुरुजी सेवापथक में देहातों में सेवाकार्य में रममाण रहे । जनसामान्य के प्रश्नोंपर सत्याग्रह में कूदकर 'जेल' में गए । और जनतांत्रिक चुनाव में हिस्सा लेकर 'मतपेटी' के द्वारा विधानसभा में जनप्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित हुए ।

'आदर्श लोकप्रतिनिधि' कैसा होना चाहिए इसका 'वस्तुपाठ' एस. एम. जोशी ने अपने वैधानिक कार्य के द्वारा खड़ा किया !

प्रेम में, युद्ध में और [illegible] में भला-बुरा सब कुछ क्षम्य माना जाता है इस साधारण मान्यता को एसेम ने [illegible] कर दिया । 1952 के आम चुनाव में सोशलिस्ट पार्टी के पुणे क्षेत्र के उम्मीदवार एस. एम. जोशी थे । शेड्यूल कास्ट फेडरेशन के भंडारा क्षेत्र के उम्मीदवार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी थे । काँग्रेस की ओर से श्री. काकासाहेब गाडगीळ खड़े थे तो शे. का. पक्ष की ओर से श्री. तात्यासाहेब जेधे चुनाव लड़ रहे थे । सभी नेताओं के प्रति एसेम के मन में अत्यंत आदर था । सोशलिस्ट पार्टी और शेड्यूल कास्ट फेडरेशन के दरमियान चुनाव समझौता परस्पर सहयोग का हो चुका था । परंतु अपवाद एस. एम. जोशी के मतदाता क्षेत्र का किया गया था ! सोशलिस्ट पार्टी डॉ. आंबेडकर को मत देने का प्रचार करेगी । मगर शेड्यूल कास्ट फेडरेशन वाले श्री. एसेम को मतदान करेंगे नहीं । वे श्री. तात्यासाहेब जेधे को मतदान करेंगे । अनेकों दलित कार्यकर्ताओं ने इस शर्त का पालन करने से इन्कार कर दिया । वे एसेम जोशी का प्रचार करने लगे । तो एसेम ने स्वयं जाकर इन दलित कार्यकर्ताओं को समझाया कि वे डॉ. आंबेडकरजी के आदेशों का पालन करें और समझौते की शर्त के अनुसार उनको मतदान न करके श्री. तात्यासाहेब जेधे जी को मतदान करें । आज-कल के चुनाव के माहौल में ऐसा तत्वनिष्ठ उदाहरण मिलना मुश्किल है !

साने गुरुजी ने 'आंतरभारती' का भव्य-दिव्य स्वप्न देखा था । पूर्व और पश्चिम की दुनिया को जोड़ने के लिए गुरुदेव टागोर ने 'विश्वभारती' की स्थापना की थी । वैसे ही भारत के भिन्न - भिन्न भाषिक जनता को जोड़ने के लिए 'आंतरभारती' की स्थापना का स्वप्न साने गुरुजी ने देखा था । उसके लिए साने गुरुजी के निर्वाण के बाद निधि संकलन करके 'आंतरभारती' ट्रस्ट की स्थापना हुई । एसेम उसके विश्वस्त बने । इ. स. 1964 में जब दक्षिण भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी विरोधी आंदोलन भड़क उठा तो इस आंतरभारती ट्रस्ट की ओर से महाराष्ट्र के छात्रपथक की स्नेहयात्रा की उन्होने घोषणा की । उसके अनुसार 'तामिळ' भाषा का वर्ग पुणे में 1964 के मई महीने में चलाया गया । 25 छात्रों ने इसमें तमिळ भाषा का और तमिळ संस्कृति का अध्ययन किया । इन्हीं छात्रों का दल लेकर मैं 1965 के मई महीने में तमिळनाडू में गया । वहाँ मद्रास (चैनई) शहर में 15 दिन और आसपास के देहातों में 15 दिन तमिळ भाइयों के अलग-अलग घरों में हम रहे । राष्ट्रीय एकात्मता की इस छात्र स्नेहयात्रा का तमिळनाडु की जनता ने स्वागत किया । एसेम जोशी को अत्यंत आनंद हुआ । उन्होंने हमारे छात्रपथक को बधाई देकर प्रोत्साहन दिया !

एसेम की जन्मपत्री में शायद ऐसा कोई विधिलिखित संकेत होगा कि सार्वजनिक

संस्थाओं में आर्थिक आपत्तियाँ खड़ी हों और इन आपत्तियों का निवारण का निमंत्रण एसेम जोशी को मिलता रहे ! सोने गुरुजी दूवारा स्थापित "साधना' साप्ताहिक आर्थिक दृष्टि से संकटग्रस्त होने पर एसेम दौड़ पड़े । आम जनता को आवाहन करके निधिसंकलन किया और 'साधना' संकटमुक्त हुई ! मुंबई का दैनिक समाचार पत्र 'लोकमित्र' बंद पड़ने की नौबत आई, वहाँ के कर्मचारी, मजदूर तथा श्रमिक पत्रकार आदि को बेकारी और भुखमरी से बचाने के हेतु एसेम ने 'लोकमित्र' दैनिक की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाई। लोकमित्र संकट्मुक्त हुआ ! फिर पुणे की महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा आर्थिक विपत्तियों में फँस गई । सभा के कार्यकर्ता एस. एम. के पास प्रार्थना करने पहुँचे । अपनी ढलती उम्र में भी एसेम ने राष्ट्रभाषा सभा का अध्यक्षपद विपत्तिकाल में स्वीकार किया । एसेम के पुण्यपावन नेतृत्व के कारण राष्ट्रभाषा सभा भी संकटमुक्त हुई ! सुस्थिर हुई । सुवर्ण महोत्सव भी मना सकी ।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा का यह किस्सा है । बैठक चल रही थी । अध्यक्ष के नाते एसेम ने सभी कर्मचारियों की पूछताछ की । उन्होंने देखा कि एक सफाईकाम करनेवाली मजदूर स्त्री को अत्यंत कम वेतन मिलता है । उन्होंने आग्रह किया कि अन्य कर्मचारियों के समकक्ष जीवननिर्वाह के लिए आवश्यक वेतन उसको मिलना चाहिए । स्वच्छता का महत्वपूर्ण कार्य करनेवाली के साथ समता का व्यवहार हमें करना चाहिए । उसका वेतन बढ़ाने को मंजूरी मिलने पर ही एसेम को संतोष मिला ! पुणे के खड़की कँटोनमेंट में भी सफाई मजदूरों को बोर्ड के सेवक समझना चाहिए इस-माँग के लिए एसेम ने अपने प्राणों की बाजी लगाई थी ! उनको न्याय मिलने पर ही उन्होंने अनशन समाप्त किया था !

जातिभेद हमारे भारतीय समाज के लिए एक अभिशाप है । जातिविहीन समाज के निर्माण के लिए 'जाति-निर्मूलन' का आंदोलन एसेम जोशी ने चलाया । राष्ट्रसेवादल में युवक-युवतियों को आंतरजातीय विवाह करने के लिए प्रोत्साहन दिया । स्वयं ऐसे आंतरजातीय विवाह आयोजित भी किए । मेरे अपने निजी जीवन में एसेम का ऐसा मार्गदर्शन मुझे मिला !

इ. स. 1946 से 1950 तक मैंने पूर्ण समय कार्यकर्ता के नाते राष्ट्रसेवादल का कार्य किया । 1950-51 वर्ष में मैंने मुंबई में विल्सन कॉलेज में एम. ए. संस्कृत के टर्म्स भरना शुरू किया । गिरगाव में मेरी बहन के घर में मैं रहने लगा । कोल्हापुर जिले में इचलकरंजी में राष्ट्रसेवादल का कार्य अच्छी तरह चलना था । श्री. शामराव पटवर्धन के मार्गदर्शन में वहां पुरुषों की और महिलाओं की शाखाएँ चलती थीं । वहाँ की स्त्री शाखानायिका कुसुम परांजपे से मेरा परिचय हुआ था । वह भी 1950-51 के दरमियान अपने बंधु के घर पर डोंबिवली में रहने आई थी । वहाँ हमारी मुलाकातें शुरू हुई । हमने विवाह करने का निर्णय

किया । परंतु ब्राह्मण - सुनार आंतरजातीय विवाह के लिए कड़ा विरोध हुआ ! एस. एम. के पास दौड पड़ा ! सारी कहानी बताई । एसेम ने सलाह दी कि अगर लड़की के मन की तैयारी पक्की है, और वह बालिग है तो आप दोनों की पुणे में हम शादी रचाएँगे ! 'घर छोड़कर भागने की' सलाह एसेम ने हमें दी थी ! कुसुम के घरवाले जल्दबाजी करके अन्यत्र उसका विवाह दबाव डालकर करने की बात सोच रहे थे ! ऐसी हालत में घर छोड़कर भाग जाने के सिवा कोई पर्याय ही नहीं था ! एसेम की यही सलाह थी । मेरी बहन के पति श्री. प्रभाकरपंत पितळेंजी ने सहायता की । डोंबिवली से कुसुम को साथ लेकर वे पुणे में पहुँचे । मैं कोल्हापुर से पुणे पहुँचा । पुणे के सेवादल कार्यकर्ताओं की टोली तैयार ही थी । साथी प्रभाकर मानकर के घर पर वैदिक पद्धति से हमारा विवाह संपन्न हुआ ! कोई जरूरी काम निकलने पर एसेम हाजिर नहीं रह सके । उनकी पत्नी ताराबाई, अनुताई लिमये, सुधाताई डेंगळे, शाम पडळकर आदि सेवादल परिवारवाले उपस्थित रहे । सर्वश्री आचार्य श्रीपाद केळकरजी और इंदुमती केळकरजी ने कन्यादान किया । विवाह के बाद शीघ्र ही मेरे माता-पिता से मिलने के लिए श्री. भाऊसाहेब रानडे.कोल्हापुर पहुँचे । उसी समय राष्ट्रसेवादल कलापथक का कार्यक्रम भी कोल्हापुर में हुआ । और कोल्हापुर के प्रथम 'सुनार-ब्राह्मण' आंतरजातीय विवाह का स्वागत समारोह सर्वश्री आचार्य भागवत, माधवराव बागल, वि. स. खांडेकर आदि के शुभाशीर्वाद के साथ संपन्न हुआ !

जब-जब दौरे पर एसेम बाहर पड़ते थे, तो जगह-जगह पर ऐसे आंतरजातीय विवाहितों के घरों में अवश्य जाते थे । उनके आगमन से हमारा धीरज और उत्साह तथा आनंद बढ़ता था । हमारी पारिवारिक समस्याओं पर उनका मार्गदर्शन भी हमें समय-समय पर मिलता रहा था । महाराष्ट्र के ऐसे अनेकों आंतरजातीय विवाहितों का एक स्नेहसम्मेलन व्यापक स्तर पर आयोजित किया जाए ऐसी उनकी इच्छा उन्होंने अनेक बार व्यक्त की थी । उनकी मृत्यु के बाद एस. एम. जोशी सोशलिस्ट फाऊंडेशन ने आंतरजातीय विवाहितों का ऐसा एक राज्यव्यापी सम्मेलन पुणे में आयोजित करके एसेम की अधूरी इच्छा की पूर्ति की ।

अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला का भी कार्य एसेम को अत्यंत प्रिय था । आजकल के यंत्रयुग में माता-पिता नौकरी-व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं । दादा-दादी अथवा नाना-नानी से कहानी सुनने की परंपरा का लोप हुआ है ! ऐसी स्थिति में बच्चों पर सुसंस्कार करने के लिए कथाकथन का माध्यम अत्यंत प्रभावी हो सकता है, ऐसी उनकी धारणा थी । 1980 में कोल्हापुर में साने गुरुजी कथामाला का शिबिर आंतरभारती शिक्षण संस्था के कोरगांवकर हाईस्कूल में आयोजित हुआ था । शिरोळ में श्री. अप्पासाहेब पाटीलजी के 'श्रीवर्धन'घर में विश्राम करने के हेतु एसेम आए थे । पता चलने पर वे कथामाला शिबिर में आ पहुँचे । हमें आनंद हुआ । समापन समारोह में शिवा शाहीर

श्री. बाबासाहेब पुरंदरे जी ने कहा, 'इतिहास में उल्लेख मिलता है कि मोगल बादशाह औरंगजेब पर छत्रपति शिवाजीराजा अपनी धाक जमाए हुए थे । इस धाक का कारण था शिवाजी राजा का नीतिपूर्ण चारित्र्य ! आज हमारे बीच सभा मंच पर ऐसा ही एक नीतिपूर्ण चारित्र्य 'एसेम' के रूप में साकार होकर बैठा है !'

पूरा सभागृह हर्षध्वनि से और तालियों से गूँज उठा । बीमारी की तकलीफ होते हुए भी कार्यकर्ताओं के पास एसेम जीवन के अंतकाल तक पहुँचते रहे ।

1986 में पुणे में साने गुरुजी स्मारक पर बॅ. नाथ पै सभागृह में राष्ट्रसेवादल के कार्यकर्ताओं की राज्यव्यापी बैठक बुलाई गई थी । एसेम ने हमें संबोधित करते हुए कहा, "1941 की तरह आज भी देशभर जातिवाद और संप्रदायवाद बढ़ रहा है । इससे देश की राष्ट्रीय एकता को और समता को खतरा है । 1991 में सेवादल को 50 साल पूरे हो रहे हैं। फिर से पूर्ण समय कार्यकर्ता आगे बढ़े । मुझे दो समस्याओं की चिंता है । राष्ट्रीय एकता और आर्थिक - सामाजिक समता !"

इसी एकता और समता के लिए अपना जीवन समर्पित करना, यही एसेम के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । 'मैं एस. एम.' आत्मकथा में एसेम ने अपना मनोगत व्यक्त करते हुए लिखा है, "दो कार्यक्षेत्रों में मुझे अपार संतोष मिला । पहला कार्यक्षेत्र 'राष्ट्र सेवादल' और दूसरा कार्यक्षेत्र 'मजदूर संगठन' ।"

खडकी-देहूरोड ॲम्युनेशन फॅक्टरी और 512 कमांड वर्कशॉप तथा अन्य डेपो में एस. एम. के नेतृत्व में सुरक्षा कर्मचारियों के संगठन खड़े होने लगे । 946 के शुरू-शुरू में संगठन की ताकत कुछ मजबूत बनी नहीं थी । 512 कमांड वर्कशॉप मजदूरों ने अपना संगठन खड़ा किया और श्री. के. एम. मॅथ्यू को अपना सरकार्यवाह चुना । एसेम अध्यक्ष बने । वर्कशॉप का एक मुख्य अधिकारी ब्रिटिश आदमी था । उसने कोई कारण बताए बिना के. एम. मॅथ्यू को नौकरी से हटा दिया ! संगठन के कार्यकारिणी की सभा में इसपर विचार हुआ । इस अन्याय का विरोध करने के लिए सामूहिक प्रतिकारशक्ति संगठन में पैदा नहीं हुई थी। खाली प्रस्ताव पारित हुआ । एसेम टमटममें बैठकर पुणे वापस आने के लिए चल पड़े । परंतु रास्ते में उनका मन बेचैन होने लगा । इस अन्याय का विरोध करना ही चाहिए ऐसा निर्णय मन में करके पुणे जानेवाली टमटमको वे वापस घुमाकर युनियन के कार्यालय में आए । सब लोक देखते ही रह गए ! अन्याय निवारण के लिए उन्होंने अनशन शूरू किया ! सात दिनों तक यह अनशन चला । आखिर में मॅथ्यू की सेवामुक्ति की योग्यायोग्यता का निर्णय करने हेतु एक त्रिपक्षीय समिति की नियुक्ति की गई । इस समितीपर वर्कशॉप अधिकारी कर्नल ली, मजदूरों के प्रतिनिधी के नाते स्वयं एसेम जोशी और असिस्टंट लेबर कमिशनर की नियुक्ति हुई । समिती ने निर्णय दिया कि मॅथ्यू की सेवामुक्ति अयोग्य

थी, और अंततः मॅथ्यू को फिर से नौकरी पर नियुक्ति मिली । तब से एसेम की 'समाजवादियों में गांधीवादी और गांधीवादियों में समाजवादी' ऐसी प्रतिमा तैयार हुई ! आगे चलकर एसेम के अथक प्रयत्नों से ऑल इंडिया जनरल डिफेन्स एम्प्लॉईज फेडरेशन भी बना । श्रीमती डॉ. मैत्रेयी बोस अध्यक्षपद पर और एसेम जनरल सेक्रेटरी पद पर नियुक्त हुए । उन्होंने अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों की पूर्ति का उपदेश भी मजदूरों को दिया ।

दलितों के तो वे आजीवन पक्षधर रहे । पिछड़े वर्ग को न्याय देने के लिए 'मंडल आयोग' का उन्होंने स्वागत किया । मंडल आयोग की सिफारिशों पर शीघ्रातिशीघ्र अमल करने की बिनती उन्होंने प्रधानमंत्री श्री. विश्वनाथप्रताप सिंह के पास की थी । महाराष्ट्र में औरंगाबाद में डॉ. आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय ऐसा नामकरण करनेवाले महाराष्ट्र विधानसभा के प्रस्ताव का समर्थन उन्होंने किया । मराठवाडा की जनता का मतपरिवर्तन करने के लिए जब वे गए तो विरोधक छात्रों ने उनके गले में जूतों की माला पहनाई ! हार-प्रहार, मान-अपमान, यश-अपयश सबका समभाव से स्वीकार करते हुए वे निरंतर अपने पथ पर चलते रहे, चलते रहे !

एक अप्रैल को 1989 में उनके निर्वाण पर महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री पु. ल. देशपांडेजीने उचित शब्दों में जन-जन की भावना व्यक्त की,

"जहाँ सिर नवाया जाए, ऐसे चरण अब नही रहे !"



मैं कपडे खादीके ही क्यों पहनता हूँ ?

"गांधीजी जब खादी का प्रचार करते थे, तब वह मुझे पसंद नही पडता था । आजकल उनके कहनेका मतलब अधिक अच्छी तरहसे समझने लगा हूँ । स्वराज्य आया, लेकिन देहातोंमें रहनेवाले दीनदलितों की गरीबी और उपेक्षा हम समाप्त नहीं कर सके हैं । आज मुझे ऐसा लगता है, कि जब मैं खादी कपडा खरीद लेता हूँ तब किसी दूरस्थ गांवकी कोई विधवा स्त्री अथवा कोई तलाक्पीडित महिला चरखेपर सूत कातकर उससे मिलनेवाले पाँच छः रूपयों में अपनी घरगिरस्थी चला रही है । अपने बालबच्चोंका पालन-पोषण कर रही है । खादी वस्त्र के इस सूत के धागेसे मेरा रिश्ता नाता उस भगिनी के साथ जुड़ा जा रहा है । केवल भाषणों में 'भाइयों और बहनों' कहकर क्या उपयोग ? उनके जीवन के साथ मेरा रिश्ता नाता जुड जाना चाहिए ।"

"मैं एस. एम." आत्मकथा से (पृष्ठ २४)

प्रो. चन्द्रकान्त शंकर पाटगांवकर

एम. ए. (हिन्दी) बनारस; बी. टी.

"सेवा", 5, राजारामपुरी, कोल्हापुर - 416 008

दूरभाष : (0231) 2526708



- 10 वर्ष - इतिहास अध्यापक, विद्यापीठ हाइस्कुल, कोल्हापुर.
- 23 वर्ष हिन्दी प्राध्यापक, रा. छ. शाहू कॉलेज, कोल्हापुर.
- 10 वर्ष : स्नातकोत्तर हिन्दी प्राध्यापक, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर
- 'स्वतंत्रता सैनिक' - सम्मानपत्र - महाराष्ट्र राज्यशासन (1971)
- 'आदर्श अध्यापक' - महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार (1984)
- भूतपूर्व सदस्य, शिवाजी विद्यापीठ विधिसभा और कार्यकारिणी.
- भूतपूर्व महामंत्री, राष्ट्र सेवा दल (10 वर्ष पूर्ण समय सेवक)
- भूतपूर्व उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय साने गुरूजी कथामाला.
- भूतपूर्व सदस्य, नियामक मण्डल, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा. (30 वर्ष राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचारक).
- म - फुले - शाहू - आंबेडकर हिन्दी पुस्तिका - लेखक.
- बिहार अकाल, कोयना भूकंप, तिलारी भूकंप संकटग्रस्तोंके लिए विद्यार्थी पथक के साथ मदत कार्य
- साने गुरूजी मंदिर प्रवेश यात्रा, आचार्य विनोबा भावे भूदान पदयात्रा, बाबा आमटेजीकी 'जोडो भारत' यात्रा आदि में सहभागी.
- 'आचार्यकुल, नागपुर, पुरस्कार', मालती शामराव पाटील कोल्हापुर पुरस्कार, साने गुरूजी बाल सेवा पुरस्कार, बॅ. नाथ पै समाजसेवक पुरस्कार.
- राष्ट्र सेवा दल, साने गुरूजी कथामाला, राष्ट्रभाषा सभा, आंतरभारती, सर्वोदय, आचार्यकुल, आदि संस्थाओंका सामान्य कार्यकर्ता.

सेवानिवृत्ति के बाद का विद्यार्थी- प्रबोधन कार्य

वर्ष	विषय	स्कुल/कॉलेज	विद्यार्थी संख्या
1988	डॉ. नेल्सन मंडेला	48	23,445
1990-91	महात्मा फुले-डॉ. आंबेडकर	238	1,06,700
1994	समतावादी लोकराजा शाहू	102	42,061
1995	महात्मा गांधी	127	42,931
1998-2000	साने गुरुजी	207	1,00,063
2001-2002	जयप्रकाश नारायण	111	49,070
	कुल..	833	3,64,270

सेवानिवृत्ती के बाद का विद्यार्थी - प्रबोधन कार्य किसी भी स्कूल या कॉलेजसे खुद के लिए मार्गव्यय अथवा मानधन स्वीकार न करते हुए साढ़े तीन लाखसे अधिक छात्रोंतक समता का संदेश पहुँचाया ।